# आरती झा आद्या

बेगूसराय,बिहार

भूप हस्तिनापुर हुए, धीर वीर दुष्यंत।
वन में मिली शकुंतला, मन में खिला बसंत।।

कन्या थी ऋषि कण्व की, शकुंतला सुकुमार।
सुंदर सौम्य सुशील वह, आकर्षक व्यवहार।।

हृदय नयन से मिल गये, खिली सुहानी प्रीत।
एक दूसरे के हुए, वचन मुद्रिका रीत।।

झुके नयन नेहिल हुए, प्रेम भरा त्योहार।
वचन मुद्रिका तब बना, जीवन का आधार।

राजा अपने राज में, राज-पाट में लीन।
शकुन्तला भूली नहीं, श्राप रहा सुधि छीन।।

हृदय पुष्प मुरझा गया, मन में भरे विषाद।
नयन बिछाए बाट पर, करता हृदय विवाद।।

भूल चुके दुष्यंत थे, तड़प रही मनमीत।
मुदरी पाई मीन से, जागी सच्ची प्रीत।।

वन-वन राजा ढूँढ़ते, पहुँचे ऋषि के द्वार।
मलिन हृदय बिन भाव थे, छलके नयन अपार।।

मिटे सभी भ्रम शोक थे, लिए हाथ में हाथ।
शकुंतला-दुष्यंत का, अमर हुआ वह साथ।।

मिलन हुआ जब प्रेम का, जागी नूतन आस।
सच्चे प्रेम की जीत से, तन-मन में मधुमास।।

# स्नेहलता पाण्डेय 'स्नेह'

वही पुराना मित्र मैं, तरुवर मेरा नाम।
रहता तेरे साथ में, हो बर्षा या घाम।।

पक्षी खुश हो कूकते,उड़तीं तितली ढेर।।
दोपहरी में बाल सब,खाते आकर बेर।।

माँ के प्यारे गीत में, होता मेरा नाम।
दीदी का मैं भ्रात हूँ, करें बात अविराम ।।

अंक प्रकृति के बैठकर, कविवर लिखते गीत।
उपजे कोमल भावना, विम्ब देख कर मीत।।

वर्षा में तुम भीगते, लेता अंक समेट।
दोपहरी हो जेठ की,होती तुमसे भेंट।।

सुनो वृक्ष की वेदना, देना उसपर ध्यान।।
पेड़ कभी मत काटना, रखना मित्र निशान।।

प्राण समाहित वृक्ष में, दिया कभी है ध्यान?
यात्रा सतत विकास की, मानव जाति समान।।

नित विकास के नाम पर, शैशव में दो मार।
बड़े-बड़े बागान को, मिटा रहे क्रमवार ।।

प्राण-वायु की खान हम , पोषक तत्व शरीर।
पेड़ काट कर नष्ट, शुद्ध वायु अमि क्षीर।।

करके हिम्मत आज मैं, सुना रहा वृत्तान्त।
नहीं सहेजा यदि मुझे, आगत कष्ट नितान्त ।।